20

आलंकारिक परिचय-1

आधुनिक समय में उपलब्ध प्रथम अलंकार शास्त्र का ग्रन्थ भामह प्रणीत काव्यालंकार है। अतएव इस शास्त्र का अलंकारशास्त्र नाम प्रसिद्ध हुआ काव्यशास्त्र का वास्तविक नाम अलंकारशास्त्र है और वह अलंकारशास्त्र काव्य का दर्शनशास्त्र है। अलंकार पद में अलम् और कार ये दो पद हैं। ''अक्षरं परमं ब्रह्म सनातनमलं विभुम्''... वदन्ति इस अग्निपुराण के वचन के अनुसार अलम् का अर्थ परब्रह्म है। अतएव अलंकारशास्त्र का अर्थ 'ब्रह्मविद्याशास्त्र' होता है। कटककुण्डलादि जैसे शरीर की शोभा बढ़ाते हैं वैसे ही अलंकार भी शब्दार्थमय काव्यशरीर की शोभा बढ़ाता है। साधारण अलंकार शोभा बढ़ाने का उपकरण विशेष है अर्थात् अलंकार सौन्दर्य पद का वाचक होता है, यह वामन का मत है। जैसे शरीर से लावण्य पृथक् नहीं होता उसी प्रकार शब्दार्थमय काव्य शरीर से भी सौन्दर्य पृथक् नहीं होता। काव्य के स्वरुप और उपादान के विषय में आलंकारिकों में मत वैसाम्य है। काव्य के प्राण के रुप में अलंकार रीति, रस ध्वनि, वक्रोक्ति इत्यादि को भिन्न-भिन्न स्वीकार करते हैं। प्राचीन आलंकारिकों ने अपने ग्रन्थों में अपने परिचय के विषय में कुछ भी नहीं लिखा। इस कारण से आलंकारिकों के देश, काल एवं कृति के विषय में पण्डितों की बहुत अधिक मत भिन्नता दिखाई देती है। विविध ग्रन्थों में स्थित उद्धृत वाक्यों को देखकर प्राचीन आलंकारिकों के देश, काल एवं कृतियों के परिचय का अनुभव किया जाता है। इस पाठ में आलंकारिकों के देश काल एवं कृति के विषय में पढ़ेगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समक्ष सकेंगे;

- आलंकारिकों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर पाने में;
- आलंकारिकों के देश काल और कृतियों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर पाने में;
- आलंकारिकों के वंश विषयक ज्ञान प्राप्त कर पाने में और;
- अलंकार सम्प्रदायों के प्रवर्त्तकों का जान पाने में।

20.1 भरत

प्राचीन आलंकारिकों में नाट्यशास्त्र के प्रणेता महर्षि भरत अद्वितीय हैं। रससम्प्रदाय के जनक भरतमुनि हैं। भरत की यह उक्ति ''**विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः**'' रसस्वरुप निर्णय में आदि सूत्र के रुप में प्रसिद्ध है। भरतमुनि काव्य में रस की प्रधानता को स्वीकार करते हैं इसलिए भरतमुनि ने कहा है- ''**न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते**''। अलंकार शास्त्र में नाट्यशास्त्र के प्रकरण में दो भरत नाम के व्यक्ति उपस्थित होते हैं। वृद्धभरत और दूसरा भरतमुनि। सामान्यत मनु याज्ञवल्क्य आदि के नाम में भी वृद्ध विशेषण प्रयुक्त होता है। वैसे ही भरत के साथ भी प्रयुक्त होता होगा। ऐसा कहा जाता है कि नाट्यशास्त्र ही मूलतः द्वादशसहस्री संहिता थी। उसके प्रणेता वृद्धभरत शब्द से संकेतित होता है। भरत नाम से सम्बद्ध नाट्यशास्त्रग्रन्थ में अपने विषय में कुछ भी नहीं लिखा। अतः रससम्प्रदाय के जनक महामुनि भरत के देशकाल आदि के विषय में बहुत अधिक मत भिन्नता है।

देश- प्राचीन शास्त्रकारों द्वारा अपने ग्रन्थ में अपने विषय में कुछ भी नहीं लिखा गया। उसी प्रकार भरतमुनि के जन्म स्थान देश के विषय में कहीं पर भी कुछ भी प्राप्त नहीं होता। भरतमुनि के देश के विषय में विद्वानों में मतभेद है। प्रायः ग्रन्थों में निवास स्थान के विषय में कुछ नहीं लिखा है। कुछ के मत में ये काश्मीर निवासी और कुछ के मत में उत्तरभारत के निवासी थे।

काल- पौराणिक वंशक्रम के अनुसार भरत व्यास, वाल्मीकि के पश्चात्वर्ती होते हुए भी संस्कृत भाषा के लेखकों से प्राचीन प्रतीत होते हैं। अभिनवगुप्त द्वारा भरतकृत नाट्यशास्त्र की राहुलक कृत टीका का स्मरण किया गया है। तमिल महाकाव्य मणिमेकलय में राहुलक का नाम आता है। मणिमेकलय नाम के उस तमिलग्रन्थ की रचना चतुर्थ ई0पू0 मानी जाती है। अतः भरत का समय इससे पूर्व होना चाहिए। कालिदास ने भी भरत को स्मरण किया है। अतः कालिदास से पूर्ववर्ती सिद्ध होते हैं। मैकडोनल महोदय के मत

टिप्पणी

में तो भरतमुनि 6वीं शताब्दी के आलंकारिक है। महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री महोदय के मत में भरतमुनि का समय द्वितीय शताब्दी है। कालिदास के विक्रमोर्वशीय नाटक में भरतमुनि का नाम प्राप्त होता है। इससे ज्ञात होता है कि 8वीं शताब्दी से पूर्व नाट्यशास्त्र प्रसिद्ध था। अत: भरतमुनि का समय 4वीं शताब्दी से पूर्व माना जाता है।

कृति- सम्प्रति उपलब्ध भरत की कृति नाट्यशास्त्र है। कुछ लोग इसमें 36 और कुछ 37 अध्याय मानते हैं। अभिनवगुप्त ने अपनी भरतसूत्र टीका में 36 अध्यायों को लिखा है प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ एक शिव नमस्कारात्मक श्लोक लिखते हैं। जिससे काश्मीर शैव प्रत्यभिज्ञाशास्त्रीय 36 तत्वों का निर्देश होता है। यह भी सम्भावना है कि अभिनवगुप्त ही तत्वों के निर्देश करने के इच्छा से कुछ अध्यायों को विभाजन करके अध्यायों की संख्या बढा दी। उपलब्ध भरतसूत्र में 6000 श्लोक हैं। तथा कुछ गद्य भी है। इतिहासविद् कहते हैं कि नाट्यशास्त्र एक काल की रचना नहीं है, अपितु दीर्घकालिक साहित्य तत्त्व निर्णय के प्रयास का फल है। नाट्यशास्त्र में तीन अंश विद्यमान हैं। सूत्र और भाष्य- अंश प्राचीनतम है। 2 कारिका- मूल अभिप्राय को बोध कराने के लिए रची गई। 3 अनुवंश्यश्लोका - ये श्लोक भरत से भी प्राचीन आचार्यो द्वारा रचित हैं। अपने मत को प्रमाणित करने के लिए भरत द्वारा ये श्लोक जोड़े गये हैं। अतएव अभिनवगुप्त ने कहा - ''ता एता ह्यार्या एकप्रघट्टकतया, पूर्वाचार्यैर्लक्षणत्वेन पठिता, मुनिनातु सुखसग्रंहाय यथास्थानं निवेशिता:''

रस सम्प्रादायक के प्रवर्तक भरतमुनि है। उसका 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद् रसनिष्पत्ति:' सूत्र ही रससिद्धान्त का प्रतिपादन करता है। भरतमुनि के मत में काव्य में रस ही प्रधान है। रस के बिना काव्य सम्भव नहीं होता है। इनके बाद विश्वनाथ भी काव्य में रस की प्रधानता स्वीकार करते है। भरतमुनि रससम्प्रदाय के आदि आचार्य हैं। भरत ने अपनी नाट्यशास्त्र के 6ठे और 7वें अध्याय में रस के विषय में अपना मत प्रकाशित किया है।

पाठगत प्रश्न 20.1

1. रससम्प्रदाय के प्रवर्तक कौन है?
2. नाट्यशास्त्र के प्रणेता कौन है?
3. नाट्यशास्त्र के किस अध्याय में रस का उल्लेख प्राप्त होता है?
4. नाट्यशास्त्र में कितने अध्याय हैं?
5. भरतमुनि का समय क्या है?
6. नाट्यशास्त्र में कितने श्लोक हैं?

20.2 भामह

महर्षि भरत के बाद प्राचीन आलंकारिकों में भामह अद्वितीय थे। भामह अलंकारसम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं। उसके मत में ''काव्यं ग्राह्यमलंकारात्''। अलंकारविहीन नायिका का मुख जैसे असुन्दर होता है। उसी प्रकार शब्दार्थमय अलंकार रहित काव्य शरीर भी असुन्दर होता है। अतएव कहा गया- ''न कान्तमपि विभूषं विभाति वनितानन्म्''। भामह के मत में तो काव्य में अलंकार ही प्रधान होता है। इसी तथ्य को प्रमाणित करने के लिए भामह ने काव्यालंकार ग्रन्थ लिखा।

वंश परिचय- भामह रक्रिल गोमिन् का पुत्र था। गोमिन् पद बौद्धों में प्रयुक्त होता है। जैसे चन्द्रगोमी आदि अत: यह बौद्ध है और भी अपने काव्यालंकार के प्रारम्भ में भामह ने सार्वसर्वज्ञ की स्तुति की। अत: ये बौद्ध हैं, ऐसा बहुत से विद्वान सन्देह करते हैं। वस्तुत ये हिन्दूधर्मावलम्बी थे। क्योंकि यागादि और सोमपान की एवं रामायणीय पात्रों की प्रशंसा की है। इतना ही नहीं है, अपितु भामह ने अपोहवाद की आलोचना भी की है। अत: हिन्दूधर्मावलम्बी थे।

देश-भामह का देश काश्मीर है। भामह काश्मीरदेशवासी हैं ऐसा सभी पण्डित स्वीकार करते हैं।

काल- भामह का समय क्या है इस विषय में महान मतभेद है। भामह के स्थितिकाल में सबसे अधिक विवाद है। आज भी अनिर्णीत है। भामह और दण्डि के पूर्व व पर को लेकर भी पण्डित लोग विवाद करते हैं। कुछ भामह को दण्डि के पूर्ववर्ती मानते हैं। दूसरे विद्वान इसके विपरीत हैं। सौभाग्य से आज दण्डी भामह से परवर्ती स्वीकार किये गये अत: दण्डी सातवीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल में हुए तो भामह को 6वीं शताब्दी कहना चाहिए।

8वीं शताब्दी में उत्पन्न भट्टोद्भट ने भामह कृत काव्यालंकार की व्याख्या की। अत: भामह उससे पूर्वकालिक होते हैं। इस प्रकार भामह को 8वीं शताब्दी से पूर्ववर्ती माना जाना चाहिए।

भामह ने भास की समीक्षा की, कालिदास भास को स्मरण करते हैं, भामह तो कालिदास का स्मरण नहीं करते हैं। भामह भास और कालिदास के अन्तर्वर्तिकालिक हुये। अत: भामह का समय 6वीं शताब्दी हुआ।

कुछ पाश्चात्य विद्वान भामहकृत न्यास पद प्रयोग को देखकर भामह को न्यासकार जिनेन्द्रबुद्धि न्यासकार से परवर्ती मानकर 7वीं शताब्दी के परवर्ती स्थापित करते हैं। परन्तु यह मत निर्मूल है क्योंकि जिनेन्द्रबुद्धि भिन्न न्यासग्रन्थकार का भामह ने स्मरण किया है। उनके प्रत्यलक्षण को देखकर कुछ कहते हैं कि भामह धर्मकीर्ति और दिङ्नाग के मध्यकालिक 6वीं शताब्दी के मध्यवर्ती हुए। 7वीं के आचार्य भट्टि ने भामह के श्लोक का अनुकरण किया अत: भामह 6वीं शताब्दी के पूर्ववर्ती हुए।

टिप्पणी

कृति- भामह ने काव्यालंकार नामक एक ग्रन्थ की रचना की। वृत्तरत्नाकर में भामह नाम से कुछ श्लोक है। कुछ लोगों के अनुसार भामह ने एक छन्दग्रन्थ भी लिखा था। परन्तु आज वह उपलब्ध नहीं होता। काव्यालंकार में 6 परिच्छेद हैं प्रथम परिच्छेद में काव्य के साधन, उनके लक्षण एवं भेद वर्णित है। द्वितीय व तृतीय परिच्छेद में अलंकारों का वर्णन है। चतुर्थ परिच्छेद में भरत द्वारा कहे गये 10 दोषों का वर्णन है। पंचम परिच्छेद में न्याय विरोधी दोषों का वर्णन है। पंचम परिच्छेद में विवादास्पदपदशुद्धि का विचार किया गया है। प्राय: काव्यालंकार ग्रन्थ में 400 श्लोक हैं। भरत के बाद में यह ही ग्रन्थ अलंकारशास्त्र का सर्वमान्य ग्रन्थ है। इससे पूर्ववर्तित मेधविरुद्र का एक ग्रन्थ था परन्तु वह इस समय उपलब्ध नहीं है। काव्यालंकार में शब्दार्थयुगल को काव्य, भरत द्वारा कहे गये दशगुणों का माधुर्योज प्रसाद इन तीन गुणों में अन्तर्भाव, वक्रोक्ति को सम्पूर्ण अलंकार का मूल इन सिद्धान्तों की स्थापना की है। भामह रस को काव्य के मूलत्व के रुप में स्वीकार नहीं करते है। काव्य का प्राणरूप अलंकार को मानते हैं। भामह के मत में सभी अलंकार ''वक्रोक्तिरनयार्थो विभाव्यते''। परवर्ती काल में वक्रोक्ति को प्रथक् अलंकार के रूप में माना जाता है। भामह की वक्रोक्ति को आधार बनाकर कुन्तक ने वक्रोक्तिजीवितम् ग्रन्थ की रचना की। भामह प्रथक्ता से रस को स्वीकार नहीं करते हैं फिर भी रसवत् अलंकार होता है यह स्वीकार करते है। अप्रस्तुतप्रशंसा वक्रोक्ति इत्यादि अलंकारों के लक्षण विचारवेला में व्यंग्यार्थ को स्वीकार करते हैं।

अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक भामह है। इस सम्प्रदाय के अनुसार अलंकार ही काव्य का प्राणभूत होता है। ''शब्दार्थौ काव्यम्'' इस लक्षण से शब्द और अर्थ काव्य के शरीर है ऐसा स्वीकार करने से अलंकार दो प्रकार का होता है। शब्दालंकार और अर्थालंकार। भरतमुनि के मत में अनुप्रास, उपमा, दीपक एवं रूपक ये चार अलंकार होते हैं। भामह ने अपने ग्रन्थ में 39 अलंकार स्वीकृत किये हैं। ये ही अलंकार बढ़कर कुवलयानन्द में 125 हो गये। अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक रस तत्व को जानते थे। अत: वे कहते है कि रसादिवत् अलंकार होता है रस भी अलंकार है पृथक् तत्व हैं ऐसा नहीं मानते।

पाठगत प्रश्न 20.2

7. अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक कौन है?
8. काव्यालंकार ग्रन्थ के रचयिता कौन है?
9. भामह का देश कौन सा है?
10. भामह के पिता का नाम क्या है?
11. भामह का समय क्या है?
12. काव्यालंकार में कितने अलंकार स्वीकृत है?

20.3 दण्डी

संस्कृत जगत में काव्यशास्त्र के द्वितीयाचार्य के रुप मे दण्डी का स्मरण होता है।

जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाऽभवत्।
कवी इती ततो व्यासे कवयस्त्वयि दण्डिनि॥

इस प्रकार प्राचीन सहृदय के वचनों से साहित्य में दण्डी की महती प्रतिष्ठा का अनुमान होता है। ''दण्डिनः पदलालित्यम्'' यह उक्ति दण्डी की प्रसिद्धि में प्रमाण है। दण्डी का वास्तविक नाम ज्ञात नहीं जैसे भवभूति और माघ के नाम के विषय में सुना जाता है। उसी प्रकार ब्रह्माण्डच्छत्रदण्ड इत्यादि दशकुमार के मंगलाचरण में दण्ड पद प्रयोग से दण्डी नाम हैं।

देश- दण्डी के निवास प्रदेश के निर्णय में अवन्तिसुन्दरी कथा प्रमाण है। उसके अनुसार दण्डी के पूर्व पुरुष गुर्जर प्रान्त में स्थित आनन्दपुर में रहते थे। उसके बाद वे दक्षिण देश में स्थित वर्तमान एलिचपुरसंज्ञा से प्रथमानमचलपुर नाम के स्थान पर आ गये। उससे इस कवि को दक्षिणात्यभाव सिद्ध होता है। कांची, कावेरी, चोल कलिंग, मलयानिल आदि दक्षिण के प्रसिद्ध स्थान आदि का दण्डी द्वारा किये गये उल्लेख ही प्रमाण है। दण्डी के दक्षिणत्यत्व में दूसरा प्रमाण का भी अनुमान किया जाता है कि काश्मीर देश में हुए आलंकारिक दण्डी के मत को प्रायः नहीं कहते हैं। अतः दण्डी का सुदूर दक्षिणवासी होना सिद्ध होता है।

काल- यद्यपि दण्डी के स्थितिकाल आज भी निर्णीत नहीं है तथापि उसके द्वारा दिये प्रेम अलंकार के उदाहरण में।-

इति साक्षात् कृते देवे राज्ञो यद्राजवर्मणः।
प्रीतिप्रकाशनं तच्च प्रेय इत्यवगम्यताम्॥

इस उदाहरण से राजवर्मन के समकालीन सिद्ध होते हैं। ऐतिहासिक कहते हैं कि राजवर्मा ही नरसिंह दूसरे नाम वाले कांचीनरेश 737-779 ईसवीं में सिंहासन आरुढ़ हुए थे।

दण्डी अवन्तिसुन्दरी कथा में बाणभट्ट और मयूर कवि को स्मरण करते हैं और उनको अभिनवगुप्त ने लोचन टीका में उदधृत-किया है इस प्रकार दण्डी के स्थिति काल की यह पूर्व-अपर सीमा है। अतः सामान्यः 715-790 ई0 दण्डी का समय रहा है।

10वीं शताब्दी में उत्पन्न अभिनवगुप्त लोचनग्रन्थ में लिखते है - ''यथाह दण्डी- गद्यपद्यमयी चम्पू''

10वीं शताब्दी के पूर्व में उत्पन्न प्रतीहारेन्दुराज उद्भट्टरचित काव्यालंकारसारसंग्रह के लघुवृति में लिखा है - ''अत एव दण्डिना 'लिम्पतीव' आदि।''

टिप्पणी

कन्नड्भाषा में अमोधवर्ष ने कविराजमार्ग नामक एक ग्रन्थ लिखा। ऐसा प्रतीत होता है कि इन्होनें स्पष्ट रूप से काव्यादर्श को आधार बनाकर इस ग्रन्थ को लिखा है। कविराजमार्ग नामक ग्रन्थ का रचनाकाल 815 से 875 ईस्वीं के मध्य माना जाता है।

दण्डी ने काव्यादर्श में जिस रीति से वर्णन किया है। उस रीति को आधार बनाकर वामन ने काव्यालंकारसूत्र की रचना की। अत: दण्डी वामन से पूर्ववर्ती स्वीकृत हैं। वामन का काल 779 ई से 813 ई तक मानते हैं।

इन सभी प्रमाणों से दण्डी के समय की परिसीमा 8वीं शताब्दी मानने योग्य है।

कृति-'त्रयो दण्डिप्रबन्धाश्च' इस पंक्ति का अनुसरण करके, काव्यादर्श, दशकुमारचरितम् और अवन्तिसुन्दरीकथा ये तीन ग्रन्थ दण्डी के कहे जाते हैं। कुछ लोग ''छन्दोविचित्यां सकलस्तत्प्रपंच: प्रदर्शित:'' इस दण्डि के वचन से 'छन्दोविचिति नामक भी दण्डि के ग्रन्थ की कल्पना करते हैं। अलंकार शास्त्रों में काव्यादर्श ग्रन्थ की गणना होती है और ग्रन्थ काव्यों में दशकुमारचरितम् एवं अवन्तिसुन्दरीकथा ये दो ग्रन्थ है।'

दण्डी का काव्यादर्श परम लोकप्रिय हैं, क्योंकि कन्नड भाषा में कविराजमार्ग नाम से इस ग्रन्थ का अनुवाद किया है। और सिंहलभाषा में ''सिय बसलकर'' नाम से अनुवाद हुआ है। इस ग्रन्थ में 4 परिच्छेद एवं 660 श्लोक हैं। द्वितीय परिच्छेद में 354 अलंकार, एवं लक्षण, उदाहरण एवं भेद कहे गये है। तृतीय परिच्छेद में शब्दालंकार की विवेचना के साथ यमक प्रपंच है, चतुर्थ परिच्छेद में दोषों की गवेषणा की गई है।

दण्डी ने रीति प्रस्थान का समर्थन किया है। साथ ही अलंकार प्रस्थान का भी समर्थन किया है। दण्डी के मत में उपमा आदि अलंकार और श्लेषादि गुण ये अलंकार पद से वाच्य होते हैं। दण्डी माधुर्यगुणवर्णन में रस की स्थिति के विषय में भी कहा कि कदाचित् वर्ण अथवा अर्थ के उत्कर्ष साधन के लिए माधुर्यगुण रस का परिपोषण करता है। सर्वप्रथम दण्डी ने काव्य में शब्द की प्रधानता कही है- शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली। जगन्नाथाचार्य ने इस मत का आश्रय लेकर ग्रन्थ लिखा।

पाठगत प्रश्न 20.3

13. काव्यादर्श के रचयिता कौन हैं?
14. दण्डी का काल क्या हैं?
15. दण्डी कहाँ से है?
16. काव्यादर्श में कितने परिच्छेद हैं?
17. काव्यादर्श में कितने श्लोक हैं?
18. काव्यादर्श का अनुवाद ग्रन्थ कौन सा हैं?

20.4 वामन

आलंकारिकों की सूची में वामन का महत्वपूर्ण स्थान हैं उसका काव्यालंकारसूत्र विषय प्रतिपादन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं ये ही वामनाचार्य रीति सम्प्रदाय के जनक है। आलंकारिक वामन वैयाकरण काशिकाकार वामन से भिन्न हैं। आलंकारिक वामन काव्य में रीति की प्रधानता को स्वीकार करते हैं। अतएव रीतिसम्प्रदाय में अग्रगण्य वामनाचार्य हैं। वामनाचार्य के देश काल कृति के विषय में सामान्य परिचय दिया जाता है।

देश- वामन जयापीडनामक काश्मीरराज राष्ट्रकूटवंश के गोविन्दतृतीया के सभापण्डित और सचिव थे। राजतरंगिणीकार की ''वामनाद्याश्च मन्त्रिण:'' इस वचन से ज्ञात होता है। अतएव काश्मीर देश वामन का निवासस्थान था।

काल- जयापीड का शासनकाल 779-819 ई हैं। और गोविन्द का शासनकाल 794-813 ई मानते है अत: वामन का समय 8वीं शताब्दी के चरम भाग और 9वीं शताब्दी का आदि भाग निश्चित होता है।

अभिनवगुप्त ने वामन को अपने ग्रन्थ लोचन में ''वामनाभिप्रायेणायमाक्षेप:'' यह स्मरण किया है। अत: वामन का अभिनवगुप्तपूर्ववर्तित्व सिद्ध करते हैं। वामन ने कादम्बरी, उत्तररामचरित और शिशुपालवध का उदाहरण दिया है। अतएव वामन का काल भवभूति, बाण और माघ के परवर्ती सिद्ध होता है। इस प्रकार वामन का काल 8वीं शताब्दी के उत्तरभाग और 9वीं शताब्दी के आदि भाग निश्चित होता है।

कृति- वामन ने काव्यालंकारसूत्र ग्रन्थ की रचना की। वामन को काव्यालंकारसूत्र नामक ग्रन्थ स्वापज्ञवृति सहित प्रसिद्ध है। इस ग्रन्थ में अलंकार शास्त्र के सभी विषय सूत्रों द्वारा निरूपित हैं। इस ग्रन्थ में पांच अध्याय है यहां 319 सूत्र हैं। यहां अध्यायों को अधिकरण शब्द से व्यवहार करते हैं। प्रथम अधिकरण में काव्य, उसके प्रयोजन और रीति निरुपित हैं द्वितीय अधिकरण में पद वाक्य वाक्यार्थ दोषों का निरूपण हैं। तृतीय अधिकरण में गुणों का विवेचन किया गया है। जहां दशगुणों का शब्द और अर्थ वृति से बीस प्रकार से विभक्त किया, चतुर्थ अधिकरण में शब्दार्थालंकारों, पंचम अधिकरण में कुछ अशुद्धिया का निर्देश हैं। काव्यालंकार के प्राचीन टीकाकार सहदेव ने कहा कि वामन की कृति नष्ट हो गयी। उनकी कृतियां का उद्धार मुकुलभट्ट ने किया। वह ग्रन्थ आज प्राप्त होता है। वामन के कुछ विशिष्ट सिद्धान्त हैं 1. गुण अलंकारों से भिन्न है, 2. रीति तीन प्रकार की है, 3. वक्रोक्ति की लक्षणरुपता 4. विशेषोक्ति का लक्षण वैचित्र्य, 5. समग्र अर्थालंकार प्रपंञ्च की उपमारूपकता। वामन ने रीति को काव्य की आत्मा स्थपित किया। यद्यपि प्राचीन विद्वानों ने रीति को निरूपित किया फिर भी रीति काव्य की आत्मा है, वामन ने सर्वप्रथम कहा।

रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक वामन हैं, उनके मत में रीति काव्य की आत्मा हैं रीति क्या है, पद संघटना रीति। वे पदसंघटना गुण में आते हैं तो गुण सम्प्रदाय आत्मा परिणमत

टिप्पणी

है। रीति के भेदों का व्यवस्थित वर्णन दण्डी ने किया। गुण और अलंकारों का असंकीर्ण रूप प्रकट करके गुणों का शब्दार्थ तत्व से 20 प्रकार से निरुपित है। काव्य शोभा करने वाले धर्म गुण है। उनके अतिशय हेतु तो अलंकार होते हैं। ऐसा वामन मानते हैं। भामहादि रस को अलंकार स्वीकार करते हैं ऐसा वामन मानते हैं। भामहादि रस को अलंकार स्वीकार करते हैं वामन इस को कान्तिगुण स्वरूप कहकर उसकी आवश्यकता स्वीकार की है।

पाठगत प्रश्न 20.4

19. रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक कौन है?
20. वामन के रचित ग्रन्थ का नाम क्या है?
21. वामन का देश कौन-सा है?
22. वामन का समय क्या है?
23. वामन के मत में काव्य की आत्मा क्या है?
24. काव्यालंकारसूत्र में कितने अधिकरण है?
25. काव्यालंकारसूत्र में कितने सूत्र हैं?

20.5 रुद्रट

रुद्रटाचार्य आलंकारिकों में अग्रगण्य हैं। रुद्रटाचार्य का दूसरा नाम रुद्रभट्ट है। आलंकारिक सम्प्रदाय में रुद्रट नाम आलंकारिक रुप में अत्यन्त प्रसिद्ध है। भट्टवामुक के पुत्र रुद्रट शतानन्द नाम से परिचित हैं।

देश- रुद्रटाचार्य काश्मीरवासी थे। काश्मीर प्रान्त में ही शास्त्रचर्चा करते थे। अतः इस रुद्रटाचार्य का निवास स्थान कश्मीर देश था।

काल- रुद्रट द्वारा विरचित काव्यालंकार के उदाहरण राजशेखर भोजराज और प्रतिहारेन्दुराज ने अपने ग्रन्थ में लिखे हैं अतः राजशेखर आदि से पूववर्ती हैं। इस प्रकार इनका समय 9वीं शताब्दी का उत्तरभाग था।

10वीं शताब्दी के वल्लभदेव ने रुद्रट के ग्रन्थ के ऊपर टीका लिखी हैं अतः दसवीं शताब्दी से पूर्वकालिक रुद्राटाचार्य है।

जैकोवी महोदय ने रुद्रट को शंकरवर्मन नामक अवन्तिवर्मन पुत्र के समकालीन मानते हैं अतः इससे पूर्व का समय सिद्ध होता है।

कृति- रुद्रट ने काव्यालंकार नामक ग्रन्थ लिखा है। शृंगारतिलक के प्रणेता भी रुद्रभट्ट हैं। यहां रुद्रभट्ट और रुद्रट दोनों समान है ऐसा कुछ विद्वानों का मत हैं। एक पक्ष दोनों को भिन्न मानता है। अधिकांश विद्वान रुद्रट की तीन कृतियां मानते हैं 1. काव्यालंकार, 2. शृंगारतिलक 3. त्रिपुरवध काव्य।

रुद्रट का काव्यालंकार विषय विवेचन की दृष्टि से अतीव व्यापक है काव्य का प्रयोजन, काव्य का उद्देश्य, कविता सामग्री, अलंकार, भाषा, रीति, रस, वृतियां आदि सभी विषय यहां समालोचित हैं आचार्य रुद्रट अलंकार सम्प्रदाय के समर्थक है अत: काव्य में अलंकार ही प्रधान है इस ग्रन्थ में 16 अध्याय है और 734 पद्य हैं। अलंकारों का विभाजन और वर्गीकरण सर्वप्रथम रुद्रट ने किया है। अलंकारों के मूल तत्व चार हैं वे है- वास्तव, औपम्य, अतिशय और श्लेष। इन्होंने प्राचीन आलंकारिकों ने जिन अलंकारों को कहा है उनमें से कुछ अलंकारों का त्याग किया है और नूतनतया कुछ अलंकारों को स्वीकार किया। कुछ अलंकारों का नाम परिवर्तन किया हैं इस प्रकार वे ही सर्वथा अलंकारमार्ग के परिष्कृतकर्ता है। वस्तुत रुद्रट के ग्रन्थ का उद्देश्य अलंकारों की समीक्षा करना था। नव रसों के अतिरिक्त प्रेय अथवा वात्सल्य रस को मानते है।

पाठगत प्रश्न 20.5

26. रुद्रट का दूसरा नाम क्या है?
27. रुद्रट का काल क्या है?
28. रुद्रट का देश क्या है?
29. काव्यालंकार ग्रन्थ का रचयिता कौन है?
30. काव्यालंकार में कितने पद्य हैं?
31. काव्यालंकार में कितने अध्याय हैं?

20.6 अभिनवगुप्त

ध्वनि प्रस्थान के विशिष्ट आलंकारिक अभिनवगुप्त थे। ये न केवल आलंकारिक थे अपितु शैवदर्शनाचार्य और तन्त्ररहस्यज्ञ थे। प्राय: कथा सुनते है कि स्वयं आनन्दवर्धन अभिनवगुप्त नाम से प्रकट हुए। उसके बाद ध्वन्यालोक की लोचन टीका लिखी। अभिनवगुप्त काश्मीर देश के शारदाधाम के अत्यन्त प्रतिष्ठित सिद्ध और महापुरुष थे। यह जनश्रुति है कि अभिनव गुप्त शिव के अवतार है।

देश- अभिनवगुप्त के पूर्वज, अत्रिगुप्त गंगा यमुना के मध्यवर्ति स्थान को त्याग कर ललितादित्य के निर्देश से काश्मीर देश आ गये थे। अतएव अभिनवगुप्त का निवासस्थान

टिप्पणी

काश्मीर देश था ऐसा विद्वानों का मत है।

काल- आनन्दवर्धन के ध्वन्यालोक ग्रन्थ पर लोचन टीका रची। इससे ज्ञात होता है कि अभिनवगुप्त आनन्दवर्धन के परवर्ती है। अभिनवगुप्त का समय दशवीं शताब्दी का उत्तरभाग या 11 वीं शताब्दी का आदि भाग निश्चित होता है।

वंश परिचय- अभिनवगुप्त के पिता का नाम चुखल था। चुखल का दूसरा नाम नरसिंहगुप्त था, वे शिव के परम भक्त थे, उनकी माता का नाम विमला उनके पितामह का नाम वराहगुप्त था। उसके कनिष्ठ भ्राता का नाम मनोरथगुप्त था। उल्पलाचार्य प्रतीहारेन्दुराज और लक्षण गुप्त ये सभी अभिनवगुप्त के गुरु थे, कर्ण, मन्द्र ये दो उनके शिष्य थे।

कृति- अभिनवगुप्त की कृतियों में ध्वन्यालोक की लोचनटीका, भरतकृतनाट्यशास्त्र की अभिनव भारती टीका, और तन्त्रलोक ये तीन ग्रन्थ नितान्त प्रसिद्ध है। रससिद्धान्तप्रवर्तकता से ये साहित्य शास्त्र के महोपकारक हैं। भरतमुनि 8 रसों को स्वीकार करते है। परन्तु नाट्यशास्त्र के ऊपर अभिनवभारती टीका में अभिनवगुप्त ने 9 रसों का प्रतिपादन किया है। शान्त भी रस है ऐसा अभिनवगुप्त का मत है। सम्प्रति नाट्यशास्त्र का कितना माहात्म्य है यह ज्ञान तो अभिनव भारती टीका के बिना सम्भव नहीं है। आनन्दवर्धन ने अपने ध्वन्यालोक में वस्तुध्वनि, रसध्वनि और अलंकार ध्वनि की समान प्रधानता दिखाई है। परन्तु अभिनवगुप्त ने रसध्वनि की अधिक प्रधानता स्वीकार की है। वैसे ही जगत में रसध्वनि की प्रधानता सभी स्वीकार करते हैं। उन्होंने कहा है - रसेनैव सर्व जीवति काव्यम् ''न ही तच्छून्यं काव्यं किंचिदस्ति।'' इसी मत की आश्रय करके विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण ग्रन्थ की रचना की। पद्य काव्य का लक्षण कहा- ''वाक्यं रसात्मंक काव्यम्। भैरवस्तव:, क्रमस्तोत्र, बोधपञ्चदशिका'', मालिनीविजयवार्तिकम्, ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी, ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृतिविमर्शिनी से सब कृतियां अभिनवगुप्त की है।

अभिनवगुप्त के विषय में एक जनश्रुति सुनी जाती है कि भैरवस्त्रोत्र की आवृति करते हुए शिष्य के साथ अभिनवगुप्त गुफा के अन्दर प्रविष्ट हो गये। उसके बाद से वे अदृश्य हैं अतएव अभिनवगुप्त सिद्ध एवं महापुरुष माने जाते है।

पाठगत प्रश्न 20.6

32. अभिनवगुप्त का देश क्या है?

33. अभिनवगुप्त का काल क्या है?

34. लोचनटीका के कर्त्ता कौन हैं?

35. अभिनव भारती किस ग्रन्थ की टीका हैं?

36. अभिनवगुप्त की माता का नाम क्या हैं?

37. अभिनवगुप्त के पिता का नाम क्या हैं?

20.7 कुन्तक

आलंकारिक सम्प्रदाय में कुन्तकाचार्य भी अग्रगण्य हैं। वक्रोक्तिजीवितम् ग्रन्थ के रचयिता हैं। वक्रोक्तिकारकुन्तकाचार्य ध्वनिकार से परवर्ती है। ध्वनि प्रस्थान की ध्वन्यालोक से ध्वन्यालोक की लोचन टीका से परिष्कृत ध्वनिप्रस्थान के विरोधार्थ कुन्तक ने ''वक्रोक्तिजीवितम्'' ग्रन्थ की रचना की। वक्रोक्तिसम्प्रदाय के प्रवर्तक कुन्तक है। यह ग्रन्थ ही वक्रोक्तिसम्प्रदाय का मुख्य ग्रन्थ है।

देश- कुन्तक काश्मीर देश के निवासी थे। कुन्तकाचार्य की शास्त्र चर्चा काश्मीर में हुई। अत: ये काश्मीरी थे।

काल- वक्रोक्तिकार थे। ध्वनिप्रस्थान के विरोध के लिए वक्रोक्ति सम्प्रदाय शुरु किया। अत: ध्वनिकार के परवर्ती कुन्तक है। ध्वनिकार का समय 9वीं शताब्दी था। अत: 9वीं शताब्दी के बाद का समय कुन्तक का हैं।

जनश्रुति है कि अभिनवगुप्त के समकालीन थे। अभिनवगुप्त का समय 10वीं शताब्दी का उत्तरभाग व 11वीं शताब्दी का आदिभाग था। अत: यह कुन्तक का समय होना चाहिए। महिमभट्ट के 'व्यक्तिविवेक' ग्रन्थ में कुन्तकविरचित वक्रोक्तिजीवित के उदाहरण एवं समालोचना विद्यमान हैं। वक्रोक्तिजीवित का सार अलंकारसर्वस्व में है। अत: महिमभट्ट के समकालीन या पूर्ववर्ती थे। इस प्रकार कुन्तक का समय 11वीं शताब्दी हुआ।

कृति- कुन्तक की रचना वक्रोक्तिजीवितम् है वर्तमान में यह पूर्ण उपलब्ध नहीं है। इसमें 4 उन्मेष हैं जिसमें वक्रोक्ति के भेदों का सांगोपांग वर्णन किया हैं कुन्तकाचार्य ध्वनिवाद का कदापि समर्थन नहीं करते हैं वक्रोक्ति के माध्यम से ही शब्दार्थ का चमत्कार होता है। व्यंजना ध्वनि वक्रोक्ति का एक भाग है। कुन्तक के मत में वक्रोक्ति ही काव्य का प्राणभूत है। वक्रोक्तिजीवित में भामह, दण्डी और उद्भट्ट का उल्लेख किया है। किन्तु आनन्दवर्धन का उल्लेख नहीं किया। इसी प्रकार अभिनवगुप्त का भी अपनी टीका में कुन्तक का नाम नहीं लिखा। इससे यह मत आता है कि कुन्तक ध्वनिप्रस्थान के विरोधी थे। अथवा अभिनवगुप्त और कुन्तक समसामयिक है। ध्वनि का खण्डन करने के लिए वक्रोक्ति सम्प्रदाय प्रारम्भ किया।

वक्रोक्ति प्रसिद्ध अभिधनव्यतिरिक्त विचित्र अभिधन का नाम है। भामह ने अतिशयोक्ति एवं वक्रोक्ति का नाम कहा है। कुन्तक ने ध्वनि का अन्तर्भाव वक्रोक्ति में किया है। इस वक्रोक्ति का अन्य आचार्यों ने आदर नहीं किया। वक्रोक्ति भी एक अलंकार है ऐसा रुद्रट मानते हैं। इस प्रकार वक्रोक्ति सम्प्रदाय का खण्डन आचार्यों द्वारा किया गया।

टिप्पणी

पाठगतप्रश्न 10.7

38. कुन्तक का समय क्या है?

39. कुन्तक का देश क्या है?

40. कुन्तक के ग्रन्थ का नाम क्या है?

41. वक्रोक्ति सम्प्रदाय के जनक कौन हैं?

42. वक्रोक्तिजीवितम् में कितने उन्मेष हैं?

43. कुन्तक के मत में काव्य का प्राण क्या है?

पाठसार

साहित्य ग्रन्थों में आनन्द प्राप्त होता हैं। वहां भी हमें काव्य पढ़ने से आनन्द होता है। काव्यों में दोषों का विवेचन काव्यों में रसादि की प्रधानता का विचार इत्यादि तो अलंकारशास्त्र में होते है। फिर भी कुछ आलंकारिकों के मत में रस ही काव्य में प्रधान है कुछ, रीति, अलंकार, ध्वनि, वक्रोक्ति आदि को प्रधान मानते हैं। अतएव रीतिप्रस्थान, ध्वनिप्रस्थान, अलंकारप्रस्थान, रसप्रस्थान, और वक्रोक्ति सम्प्रदाय आदि का आविर्भाव हुआ। यहां आलंकारिकों के देश काल और कृतियों के विषय में चर्चा हैं। भरतमुनि नाट्य शास्त्र के प्रवर्तक है। चतुर्थ ईसवींपूर्व भरतमुनि ने काव्य में रस ही प्रधान है। ऐसा मानकर रस सम्प्रदाय का प्रारम्भ किया। छठी शताब्दी में काश्मीरवासी भामह ने काव्यालंकार ग्रन्थ की रचना की। भामह के मत में तो अलंकार ही प्रधान है अत: अलंकारसम्प्रदाय के प्रवर्तक भामह है। 7वीं शताब्दी में दक्षिणात्य आलंकारिक दण्डी ने काव्यादर्श ग्रन्थ लिखा। दण्डी अलंकार सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य हैं फिर भी दण्डी रीति विवेचना से प्रख्यात थे। 9वीं शताब्दी में काश्मीरवासी वामन ने काव्यालंकारसूत्र की रचना की। वामन के मत में काव्य में रीति ही प्रधान होती है। अत: ये रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक है। काश्मीरवासी रुद्रट ने काव्यालंकार ग्रन्थ लिखा। इनके मत में भी अलंकार प्रधान है।

काश्मीरवासी 10वीं शताब्दी में उत्तर में अभिनवगुप्त ने नाट्यशास्त्र पर अभिनवभारती टीका लिखी और ध्वन्यालोक पर लोचन टीका लिखी, अभिनवगुप्त रस प्रस्थान के एक आचार्य हैं। 11वीं शताब्दी में काश्मीरवासी कुन्तक ने वक्रोक्तिजीवितम् ग्रन्थ की रचना की। कुन्तक ने वक्रोक्ति सम्प्रदाय को प्रारम्भ किया। इस प्रकार इस पाठ में आलंकारिको के परिचय, सम्प्रदाय व सिद्धान्तों को समालोचना की गई है।

आपने क्या सीखा

- आलंकारिकों के विषय में जाना।
- उनके देश काल एवं कृतियों को जाना।
- उनके वंश परिचय को जाना।
- अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तकों को जाना।

पाठान्तरप्रश्न

1. भरतमुनि के देशकाल एवं कृति के विषय में लेख लिखिए।
2. नाट्यशास्त्र का संक्षेप परिचय दीजिए।
3. भरतमुनि का सामान्य परिचय लिखिए।
4. भामह के देश काल व कृति के विषय में लिखिए।
5. काव्यालंकार का संक्षेप परिचय दीजिए।
6. भामह के काल के विषय में लिखिए।
7. दण्डी के देश काल एवं कृति के विषय में लिखिए।
8. दण्डी के काल के विषय में संक्षेप परिचय दीजिए।
9. काव्यादर्श का संक्षेप परिचय लिखिए।
10. वामन का संक्षेप में परिचय लिखिए।
11. वामन के देश काल व कृति के विषय में लिखिए।
12. काव्यालंकारसूत्र का संक्षेप में परिचय लिखिए।
13. रुद्रट के देश काल व कृति के विषय में लिखिए।
14. काव्यालंकार ग्रन्थ का सामान्य परिचय दीजिए।
15. अभिनवगुप्त के देश काल व कृति के विषय में लिखें।
16. अभिनवगुप्त की कृति के विषय में लघुटिप्पणी कीजिए।
17. अभिनवगुप्त का सामान्य परिचय दीजिए।

टिप्पणी

18. कुन्तक के देशकाल व कृति के विषय में लिखिए।

19. वक्रोक्तिजीवित ग्रन्थ पर निबन्ध लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

20.1

1. भरतमुनि।
2. भरतमुनि।
3. छठे और 7वें अध्याय में।
4. 36 या 37 अध्याय।
5. तमिलग्रन्थ का रचनाकाल 4वीं ई.पू मानते है उससे पूर्ववत्ती भरत है।
6. 6000 श्लोक।

20.2

7. भामह।
8. भामह।
9. काश्मीर।
10. रक्रिल गोमिन्।
11. 6वीं शताब्दी।
12. 39

20.3

13. दण्डी।
14. 8वीं शताब्दी।
15. दाक्षिणात्य।
16. चार।

17. 660 श्लोक।

18. कविराज मार्ग।

20.4

19. वामन।

20. काव्यालंकारसूत्र।

21. काश्मीर देश।

22. 8वीं शताब्दी का उतर भाग, 9वीं शताब्दी का आदि भाग।

23. रीति।

24. पांच।

25. 319 सूत्र।

20.5

26. रुद्रट ।

27. नवमशतक के उत्तरभाग।

28. काश्मीर।

29. रुद्रट।

30. 734 पद्य।

31. 16 अध्याय।

20.6

32. काश्मीर।

33. 10वीं शताब्दी का आदिभाग, अथवा 11वीं शताब्दी का उत्तरभाग।

34. अभिनवगुप्त।

35. नाट्यशास्त्र।

36. विमला।

37. नरसिंह गुप्त।

20.7

38. एकादशशतम।

39. काश्मीर देश।

40. वक्रोक्तिजीवितम्।

41. कुन्तक।

42. चार उन्मेष।

43. वक्रोक्ति काव्य का प्राण।

क्र.सं.	नाम	देश	काल	कृति
1.	भरत	काश्मीर	4 वीं शताब्दी से पूर्व	नाट्यशास्त्र
2.	भामह	काश्मीर	6 वीं शताब्दी	काव्यालंकार
3.	दण्डी	दाक्षिणात्य	7 वीं शताब्दी	काव्यादर्श
4.	वामन	काश्मीर	9 वीं शताब्दी	काव्यालंकारसूत्र
5.	रुद्रट	काश्मीर	9 वीं शताब्दी	काव्यालंकार
6.	अभिनवगुप्त	काश्मीर	10 वीं शताब्दी	अभिनवभारती, लोचनटीका, तन्त्रलोक
7.	कुन्तक	काश्मीर	11 वीं शताब्दी	वक्रोक्तिजीवितम्